P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-I*September-2015

रघुवीर सहाय के काव्य में राजनीतिक संदर्भ

प्रदीप कुमार
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
पाण्डवेश्वर कालेज,
बर्द्धमान, पश्चिम बंगाल

सारांश

रघुवीर सहाय समकलीन दौर के सशक्त लेखक, कवि, पत्रकार, उपन्यासकार, नाटककार और सम्पादक रहे हैं। वह समाज में व्याप्त विसंगतियों के विरूद्ध अपनी आवाज कविता के माध्यम से बुलंद की है। उनकी कविता में राजनीतिक संदर्भ क कई सरोकार हैं। लोकतंत्र, संसद, जनता, सड़क और मतदाता राजनीतिक संदर्भ के प्रमुख आधार हैं। राजनीतिक संदर्भ के अंतर्गत आम जनता की जिजीविषा है। जो आजादी के बाद कि सबसे बड़ी त्रासदी है। आजादी मिली पर खास वर्ग के लोगों को जो अतिरिक्त जनता को उनके अधिकारों से धोखा देती आ रही है।

दूसरा सप्तक (1951) रघुवीर सहाय का प्रथम काव्य संग्रह है। इस संग्रह कि समस्त कविताओं में रोमानियत दर्शन है। इस दर्शन से प्रभावित रघुवीर सहाय की प्रमुख कविता 'याचना', 'गजल', 'बसंत', 'प्रभाती' और 'भला' है। इन कविताओं में राजनीतिक बोध कि आहट नहीं पर राजनीतिक दर्शन को सुगबुगाहट है। 'पहला पानी' कविता में रघुवीर सहाय ने पानी कि समस्या पर सवाल उठाई है। 'सीढ़ियों पर धूप में' काव्य संकलन कि कविता 'पढिए गीता' में नारी की समस्या को ओर ध्यान अकृष्ट की है ।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद राजनीति की गति लगभग रूक गई, सांसद अपनी स्थूल शरीर के कारण जनता के समक्ष पहुँचने पर अपराध बोध महसूस करते हैं। इस अपराध से निजात पाने लिए उनके पास एक राजनीतिक तोता भी है जो चीख मारकर सर्वोच्च शासक, इस अपराध बोध शासक को बतलाता है। इस अपराध बोध नेता को जनता देखती ह, और फिर मजबूर होकर चुनती है। रघुवीर सहाय इस देश् कि जनता से नफरत करता है। इस सम्बन्ध में लिखते हैं–

"एक मेरी मुश्किल है जनता जिससे मुझे नफरत है सच्ची और निरूसंग जिस पर कि मेरा क्रोध बार–बार न्योछावर होता है" आत्महत्या के विरूद्ध, पृ0 81

"आत्महत्या के विरूद्ध" काव्य संकलन कि अधिकांश कविताओं में राजनीति का हवाला है। 'स्वाधीन व्यक्ति', 'मेरा प्रतिनिधि', 'अधिनायक', 'फिल्म के बाद चीख', 'नेता क्षमा करे', 'अपने आप और बेकार' लोकतंत्रीय मृत्यु' 'नई हँसी', 'कोई एक और मतदाता' और 'आत्महत्या के विरूद्ध' जैसी चर्चित कविताएँ जो राजनीतिक संदर्भ को उभारती है।

मुख्य शब्द : राजनीतिक संदर्भ, लोकतात्रिक सरकार, बहुसंख्यक जनता, भारतवासी।

प्रस्तावना

राजनीति जिन–जिन विषयों की व्याख्या करती है वे हैं राज्य सरकार और कानून। भारत में लोकतांत्रिक सरकार है। ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें जनता स्वय पूर्ण शक्ति में होती है। 1947 के बाद भारत एक स्वाधीन लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में उभरकर दुनिया के सामने आता है। जिसम राज्य, सरकार और कानून जनता के हित को नजर में रखते हुए अपना काम करती है, पर ऐसा होता तो भारत देश के लिए चमत्कार सिद्ध होता। आजादी मिली, एक खास वर्ग के लोगों को बहुसंख्यक जनता को उनके अधिकारों से वंचित रखती आ रही है। आजादी के बाद लोगों में उल्लास था, उनकी आँखों में आजादी की चमक थी और वह सोचते थे कि अब ''अच्छे दिन आने वाले हैं''। आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी इस देश में सबसे बड़ी शक्ति के रूप में उभरकर सामने आई। जिसका चुनाव चिन्ह हाथ का निशान था, और आज भी हैं। यह निशान मेहनत का प्रतोक है, यानी अब सभी हाथों को रोजगार मिलेगा, लोग एक साथ मिलजुल कर रहेंगें, इन्ही हाथों से भारत वर्ष का हरियाली और खुशहाली लौटायेंगे, सब लोग एक साथ मिलजुल कर रहेंगें। ईद, दुर्गापूजा, दीपावली, क्रिसमस इत्यादि त्यौहार मिलजुल कर मनाएंगें, यह त्यौहार किसी एक समुदाय

के नहीं होंगें, बल्कि भारतवासियों का पवित्र त्यौहार होगा, जिनका आनंद सभी एक साथ उठाएंगे, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। रघुवीर सहाय के काव्य में राजनैतिक हलचल की हवा धीरे–धीरे चलती है जो संवेदनशील से अतिसंवेदनशील मुददों को बड़ी खूबसूरती के साथ उनकी असलियत को भारतीय जनता के समक्ष उजागर करती है तथा जो, राजनीति के हर पहलू को स्पर्श करती है ''दूसरा सप्तक'' (1951) सात कवियों का काव्य संकलन ''अज्ञेय'' के द्वारा संपादित होता है। इस संकलन में भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, जैसे महान कवियों के नाम के साथ रघुवीर सहाय भी जुड़ते हैं। रघुवीर सहाय के काव्य की एक प्रमुख विशेषता यह है की उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर समाज की विभिन्न वास्तविकताओं को बड़े अच्छे ढंग से अपनी कविताओं में जगह दी है। वह रचनाकार के लिए किसी राजनीति दल से जुड़ाव को अच्छा नहीं समझते थे, अतः उन्होंने स्वतंत्र रहते हुए समाज को खुली आँखों से देखा है। इस संदर्भ में सुरेश शर्मा लिखते हैं– ''नई वास्तविकताओं के नए अनुभव की अभिव्यक्ति रघुवीर सहाय की कविताओं में सबसे अधिक है। यही काव्य गुण उन्हें अपने दौर का प्रतिनिधि कवि बनाता है। रघुवीर सहाय की राजनोतिक व्यक्तित्व भी विशेष प्रकार की है। उनका झुकाव लोहिया के समाजवाद की ओर जरूर रहा लेकिन उन्होंन समाजवादी दल की सदस्यता नहीं ली, वे रचनाकार या पत्रकार के राजनोतिक दलों के सदस्य होने के विरुद्ध थे।''[1]

''दूसरा सप्तक'' काव्य संकलन में रघुवीर सहाय की कुल चौदह कविताएँ सम्मिलित हैं उनमें ''याचना'', ''गजल'', ''बसंत'', प्रभाती, ''सायकाल'', ''पहला पानी'', ''मह अँधेरे'', ''एकॉडट बहुस्याम'', ''अनिश्चय'', संशय , ''लापरवाही'', ''समझौते'', कोशिश, और ''भला'', प्रमुख है। इन रचनाओं में रोमानियत प्रकृति चित्रण उल्लास, आत्मबोध, तथा देश प्रेम की चिंता है। रघुवीर सहाय की प्रथम कविता का शीर्षक ''याचना'' है जिसका रचनाकाल 1948 है। इस कविता में कवि ने स्वाधीनता के प्रति पहली बार अपना दृष्टिकोण अभिव्यक्त किया है–

''यक्ति के सारे निमंत्रण तोड़ डाले
मुक्ति के कारण नियम सब छोड़ डाले
अब तुम्हारे बंधनों की कामना है।[2]

उक्त अंश में कहा गया है कि राजघरानों, समाजवादी, तथा बितानी बंधनों से भारतीय स्वाधीन हो गए हैं, निमंत्रण के सम्पूर्ण दरवाजे खुल चुके है यहाँ तुम्हारे बंधनों से तात्पर्य, स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू से हैं उन्हीं के नेतृत्व में हमारे देश का शासन चलेगा, परन्तु ऐसा होता तो कितना अच्छा हाता, लेकिन हुआ नहीं, हमारे देश में कानून, नियम और नीतियाँ इत्यादि पर बड़े सवाल है जिनके तले हमारे देश की शासन व्यवस्था अभी भी वैसी ही है। इस सन्दर्भ में डॉ एस० गंभीर का कथन है– ''राजनीतिक का प्रश्न जनता के जीवन की तमाम समस्याओं में घुलमिल जाता है। समाजवाद एक आर्थिक और राजनैतिक शक्ति है, देश में पैर जमाए रखने के लिए उसने फौज, कचहरी, शिक्षालय, जमींदार, मुनाफाखोर, आदि वर्गों और संस्थाओं द्वारा तमाम को जकड़कर रखा हैं।''[3]

प्रत्येक व्यक्ति कहीं न कहीं राजनीतिक दल का सदस्य होता है जो केवल मत दने के लिए भूमिका निभाते हैं, तो कुछ सदस्य किसी राजनीतिक पार्टी में सम्मिलित होकर प्रचार, पोस्टर, एवं नेताओं की सभा में उपस्थित दर्ज करातें हैं, कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो चुनाव, राजनीति से अलग रहते हैं, जो किसी दल का सहयोग नहीं करते हैं. राजनीति नताओं की जुवान में एक गंभीर एवं संवेदनशील विचार धारा होनी चाहिए थी जिसमें जनता एक जुट होकर राजनीति में बढ़–चढ़कर भाग लेती, लेकिन यह खास मुसद्दीलाल जैसे लोगों का प्रतिनिधि करती है जिसमें जनता की आस्था धीरे–धीरे खिसकती है। इस सन्दर्भ में रघुवीर सहाय कहते हैं– ''पहले तो हम उस दुनिया को देखें जिसमें हमें पहले से ज्यादा रहना पड़ रहा है, लेकिन जिससे न लगाव साध पा रहे है न अलगाव। लोकतंत्र मोटे, बहुत मोटे तौर पर लोकतंत्र ने हमें शानदार इंसान की जिंदगी और कुत्ते की मौत के बीच चाँप लिया है।''[4] मनष्य का जीवन अनमोल है, यह केवल एक ही बार प्रत्येक व्यक्ति के पास आता है, लेकिन राजनीति ने इस शानदार जीवन से हम लगाव साध नहीं पा रहे है। लोकतंत्र मोटे तो है ही लेकिन बहुत मोटे होते जा रहे हैं, मुसद्दीलाल जैसे भ्रष्ट लोगों का वर्चस्य बढ़ गया है और मतदाता कुत्त की तरह चिल्लाने वाले जीवन जीने के लिए मजबूर हो रहा है।

लोकतान्त्रिक देश में जनता के विचारों, भावनाओं, समस्याओं अर्थात सम्पूर्ण जरूरतों की जिम्मेदारी सरकार की होती है सरकार संसद में जो भी कानून पारित करती है वह लोकहित में होगा, केवल जनता इसकी अपेक्षा कर रही थी और आज भी करती आ रही है सरकार का सिंहासन ऊँचा हो गया है, और जनता की सभा नीची। सरकार के पास बंगला, गाड़ी, नौकर, पुलिस, इत्यादि जरुरत के सभी संसाधन मौजूद हैं। जनता के नसीब में दो जून पेट भरने के लिए सुखी रोटियां भी नहीं है। जनता में बुजुर्ग, जवान, एवं युवा भी अनगिनत है, जो सरकार की योजनाओं की ओर टकटकी लगायें बैठे हैं। जिसमें लूले, लंगड़े और बहरे अपनी जरूरतों को ध्यान में रखकर, सरकार की ओर आस लगाएँ केवल विकलांग की सूचियाँ नहीं गिना रहे हैं बल्कि सरकार को इसपर पहल करने के लिए मजबूर भी कर रहें हैं। सरकार और जनता के बीच दूरियां बढ़ गई है। रघुवीर सहाय की कविता ''मेरा प्रतिनिधि'' इस बात पर इस तरह प्रभाव डालता है –

"सिंहासन ऊँचा है सभाध्यक्ष छोटा है
अगणित पिताओं के एक परिवार के
मुँह बाये बैठे हैं लड़के सरकार के
लूले, काने, बहरे, विविध प्रकार के ।''[5]

केवल देश में राजनीति हो रही, बयान वाजी हो रही है, लोगों को मूलभूत मुददों से भटकाया जा रहा है। देश में लोग, नेताओ के भ्रम के साये में जी रहे है, केवल सरकार के उपदेशों में 1947 से 1967 तक बीस वर्षों में आतक, भय, त्रासद, अपहरण आर संत्रास के हठकंडे खूब आजमाये। एक नई पीढ़ी, और पुरानी पीढ़ी दो भींगी बिल्ली की तरह गुजर गए और वह अपने अस्तित्व की

रक्षा के लिए अपने ही देश में पराये हो गए। रघुवीर सहाय की कविता ''मेरा प्रतिनिधि'' इस सन्दर्भ को यूँ व्यक्त करती है–

"बीस वर्ष खो गए भरमे उपदेश में
एक पूरी पीढ़ी जन्मी पली पुसी कलेश में
बेगानी हो गई अपने ही देश में ।''[6]

भारत गावों का देश है, गाँव में अमन, चौन, और शांति थी, लोंगो में जीवन के प्रति उल्लास था, इस पवित्र गाँव में आजादी के बीस साल बाद स्वाधीनता का माहौल नहीं बन पाया, लोग रोज–रोज, थोड़ा थोड़ा मरने लगे, धीरे धीरे उनकी नैतिकता का हनन होने लगा, सबल का निर्बल पर अत्याचार बढ़ने लगा, निर्बल की माँ–बहने एवं बेटी रईसजादों की फरमाईस बन गई। लोंगो की आस्था गाँवों से उट गई और वे धीरे–धीरे शहर की और खिसकने लगे। रघुवीर सहाय की और कविता ''भीड़ में मैकू और मैं'' में तिल–तिल गाँव शहर की ओर पलायन के कारण को कुछ इस तरह बयान किया गया हैं–

''रोज–रोज थोड़ा–थोड़ा मरते हुए लोंगो का झुण्ड
तिल–तिल खिसकता हैं शहर की तरह
फरमाईस संभोग में सुनो एक उखड़ी है सांसें''
''सांय सांय इस महान देश में क्या करे
कहा जायें घवराते लड़के गदराती औरत लेकर।"[7]

शहर गाँव, बाजार, हाट, कस्बा सभी स्थानों पर लोगों के रेंगने, चिल्लाने, गरजने, का कारुणिक एहसास है, लोग गरीबी की समस्या से जूझ रहे है, सरकार ''गरीबी हटाओ'' के नारे से पुरे देश में केवल उनकी गरीबी पर मरहम लगा रही है, लोंगो की तीन बुनियादी सुविधाएँ भोजन, वस्त्र और आवास है इन तीनों से गरीब वंचित हैं। ''आत्महत्या के विरुद्ध'' कविता में गरीब से ऊबी, पीली पड़ रही, महिला की जीजिविषा है, तड़पन है जो भूख मिटाने के लिए एक दाने के लिए दम तोड़ रही हैं वह किसी की पत्नी है, लेकिन गरीबी उस पति को इतना लचार बना देती है कि वह सड़क कि धुंधली रोशनी के किनारे हरमुनियम कि आवाज कि तरह धीरे–धीरे स्वर में कुछ बोल रही है। रघुवीर सहाय की कविता ''आत्महत्या के विरुद्ध'' सहज ही इस अनुभूति को व्यक्त करती है–

''एक गरीब, ऊबी, पीली रोशन बीबी
रोशन, धुंध, जाला, यमन, हरमुनियम अदृश्य
डब्बाबंद शोर
गाती गला भोज आकाशवाणी अंत में तड़प।''[8]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शहरों की ओर सरकार का विशेष ध्यान एवं योजनाएँ रही शहरों के सुंदरीकरण के लिए सरकार ग्रामीण जनता की योजनाओं का बंटाधार किया, जिसके परिणाम स्वरुप गाँव पिछड़ता चला गया और शहर आधुनिक कारण के चकाचोंध में दिन से अधिक सुन्दर रात में लगने लगा, इसी शहर में एक कस्बा भी है जहाँ गाँव से आये मजदूर वर्ग के लोग रहते हैं जहाँ बिजली नहीं बल्कि लालटेन की रोशनी में रात व्यतीत करनी पड़ती है। इस कस्बे में रहने वाला दो व्यक्ति हैं, जो आजादी के पहली पीढ़ी बाप एवं आजादी के बाद की पीढ़ी बीटा, दोनों सरकार की आंतरिक पेंच की मरी हुई चूड़ियाँ जानते है, जो नेहरू युग क औजारों की सबसे बड़ी देन हैं। प्रधानमंत्री जनता के बीच एक सम्पन्न और दूसरा विपन्न ऐसी रेखा से नरेन के पास मेहनत है पर उस मेहनत के बावजूद जिस स्थान पर रह रहा है, वह चौकी भी हिल रही है लेकिन आसियाने में ऐसा बिल्कुल नहीं हो रहा है, बिना मेहनत करने वाले के पास टटी चौकी, और हिलती लालटेन है। इस बात को रघुवीर सहाय की कविता 'आत्महत्या के विरुद्ध' में सहज ही व्यक्त किया गया है–

"राजधानी से कोई कस्बा दोपहर बाद छटपटाता है
एक फटा कोट एक हिलती चौकी एक लालटेन
दोनों बाप मिस्त्री और बीस बरस का नरेन
दोनों पहले से जानते है पेच की मरी हुई चूड़ियाँ
नेहरु युग के औजारों को मुसद्दी लाल
की सबसे बड़ी देन"[9]

आजादी के बीस वर्षों के बाद देश में राजनीतिक बर्बरता इतनी तीव्र हो गई है कि जनता के लिए सरकार के पास उनकी तकलीफे, दुःख, दर्द सुनने तथा सुलझाने का वक्तनहीं है (वह) सरकार वैध और अवैध रूप से सरकारी खजाने की कालाबाजारी एवं भ्रष्टाचार करने के तरीके ढूंढते रहते हैं। इसलिए प्रत्येक राजनीति करने वाले व्यक्ति आवश्यकता से अधिक मोटे हो रहे है। अपनी स्थूल शरीर के कारण विधायक, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, जब जनता के सामने आते हैं तो वे अपराधबोध महसूस करते हैं वह कीमती वक्त को यों ही गुजार देते हैं। वह जनता के हर सवालो के उत्तर देने से कतराते है। 'नई हसी' कविता में रघुवीर सहाय स्थूल कायं नेताओं के बारे में लिखते है –

"महासंघ का मोटा अध्यक्ष
धरा हुआ गद्दी पर खुजलाता है अपदस्त सर नहीं
हर सवाल का उत्तर देने में पेश्तर"[10]

रघुवीर सहाय की कविता 'आत्महत्या के विरुद्ध' में पहली बार जन प्रतिनिधियों की वाक्य चातुरी को बेवादी के साथ जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का सफल प्रयास हैं। "लोकतंत्रोय मृत्यु" कविता में जनता और सरकार दोनों के दृश्य को उकेरने में तनिक भी देर नै की है वे कहते हैं –

"सामने लहराते एक हजार फूलों के रंग से डर कर
सिमरे हुए लोग उसमें बैठे थे
मृत्यु की खबर की प्रतीक्षा में
एक झीना पर्दा था दोनों के बीच में
अपराधी से आते हैं राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधायक।"[11]

रघुवीर सहाय एक नागरिक, पत्रकार कथाकार संवाददाता और संवेदनशील साहित्यकार भी हैं इसलिए जनता के दायित्व को वह चुनौती की तरह साहित्य में स्वीकार करते हैं। वह राजनीतिक मुद्दों के प्रति कृत्य संकल्प भी हैं उनके पास जो अतिरिक्त चेतना है वह साधारण जनता की अनुभूति है जो निजी अभिव्यक्ति क रूप में प्रकट करते है व कहते है– "सबसे मुश्किल रास्ता है की मैं सब सेनाओं में लडू–किसी में ढाल सहित, किसी में निश्कवच होकर, मगर अपने को अंत में मरने सिर्फ मोर्चे पर दूँ। अपनी भाषा के शिल्प के और उस दो तरफा जिम्मेदारी के मोर्चे पर जिसे साहित्य कहते है।[12]

रघुवीर सहाय की राजनीतिक लड़ाई व्यक्तिगत नहीं वह सामूहिक दृष्टिकोण की चिंताओं की कारुणिक पहल है। वह साहित्यकार को साहित्य के विशेष हथियार के रूप में इस्तेमाल करने के ताकत अन्य साहित्यकारों

को देते है। वह किसी व्यक्ति को राजनैतिक दल से अलग रहना बेईमानी समझते है और किसी दल का गुलाम बनकर रहना सबसे बरी मुर्खता समक्षते है वे कहते है –

"लेखक को राजनीतिक से अलग रहना, हर हालत में बुयारी है, किन्तु राजनितिक पार्टी का गुलाम हो जाना, सिर्फ उसी हालत में बेईमानी है। जब यह हरकत समाज के नाम पर कर रहे है"[13]

रघुवीर सहाय के काव्य में राजनीतिक, चुनाव, मतदाता, संसद, जनता, नेता, इत्यादि शब्दों की चर्चाएँ खूब हुई हैं जो राजनीतिक सन्दर्भ को दर्शाती है इसके माध्यम से भारतीय जनता में राजनीतिक चेतना को उजागर करने की कोशिश कवि द्वारा की गई है। जनता "मौन" है जिसके कारण वह सब कुछ जानने के बाद भी दुःख, दर्द सहती आई है कवि को जनता के मौन से नफरत, गुस्सा और क्रोध भी हैं–

" एक मेरी मुश्किल है की जनता
जिसमें मुझे नफरत है सच्ची और निसंग
जिस पर में क्रोध बार–बार न्योछावर होता है"[14]

अतः इस तरह हम देखते हैं की रघुवीर सहाय की कविता में स्वातंत्र्योत्तर समाज की विडम्बनाएँ और अनुभूतियों में विशेष रूप से राजनीति से सम्बंधित तमाम सूक्ष्म से सूक्ष्म पहलुओं पर भी कवि की दृष्टि गई है जो कवि की अहम् विशेषताएं है, जो की उन्हें समकालीन कवियों में राजनीतिक चेतना के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण स्थान दिलाती है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा सुरेश (स०) रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड–1 राजकमल प्रकाश नई दिल्ली संस्करण 2002 पृष्ठ संख्या–10
2. अज्ञेय ''(संपादन)'' दूसरा सप्तक भारतीय पीठ नई दिल्ली. चौथा संस्करण 12, पृष्ठ संख्या–143
3. ''गंभीर'' एस, ''साठोतरी हिंदी कविता में राजनीतिक चेतना'' विधा बिहार कानपुर, प्रथम संस्करण 1992, पृष्ठ संख्या– 23
4. सहाय, रघुवीर ''आत्मा हत्या के विरुद्ध'' राजकमल प्रकाश नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2002 पृष्ठ संख्या–09
5. शर्मा सुरेश (स०) रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड–1 राजकमल प्रकाश नई दिल्ली, संस्करण 2002 पृष्ठ संख्या – 109
6. सहाय, रघुवीर ''आत्मा हत्या के विरुद्ध'' राजकमल प्रकाश नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2009 पृष्ठ संख्या– 27
7. वही पृष्ठ संख्या – 55
8. वही पृष्ठ संख्या – 28
9. वही पृष्ठ संख्या – 30
10. वही पृष्ठ संख्या – 21
11. वही पृष्ठ संख्या – 42
12. वही पृष्ठ संख्या – 10
13. कल्पना अगस्त अंक 1965, पृ0 7
14. सहाय रघुवीर, आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्क्रण–09, पृ0 81